2. रेडियो और हिन्दी

रेडियो श्रव्य–संचार–माध्यम के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय है, जिस के हिन्दी–प्रसारणों की प्रकृति पर ध्यान देने से विदित होता है कि भाषागत (व्याकरणिक) शुद्धता के साथ–साथ उच्चारणगत शुद्धता पर ज्यादा बल दिया जाता है तथा प्रसारण को अधिकाधिक जीवंत एवं प्रभावशाली बनाने के लिए बलाघात, अनुत्रान, मात्रा, विराम, आदि के उचित प्रयोग पर भी यथेष्ट ध्यान दिया जाता है।

रेडियो की हिन्दी सामान्यतः जनसामान्य की भाषा होती है, परंतु प्रशासन,

विधि, बैंक, शिक्षा, खेलकूद, स्वास्थ्य, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, कृषि, आदि से सबंधित प्रसारणों में भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित हिन्दी–शब्द यथावत् प्रयुक्त होते हैं, जिसे हिन्दीभाषी प्रबुद्ध जनता ही समझ सकती है। समय–सीमा के कारण लम्बे–लम्बे पदबंध (यथा–भूकंप–पीड़ित क्षेत्र के लोगों की सहायता के लिए एकत्रित राशि) प्रयुक्त होते हैं।

भिन्न–भिन्न विधाओं/प्रयोजनों की हिन्दी में भी भिन्नता परिलक्षित होती है, यथा– 'वार्ता' की हिन्दी मूलतः लिखित होती है, जिसका वाचन इस तरह होता है, जैसे एकालाप हो; 'परिचर्चा में बोलचाल वाली सामान्य हिन्दी की वरीयता होती है, जिस में आवश्यकतानुसार संस्कृत, अरबी, फारसी, तथा देशज शब्दों का इस्तेमाल होता हैं। 'समाचार'–वाचन में एक निश्चित प्रवृत्ति/रूढि का अनुसरण किया जाता है, जिसे रेडियो की हिन्दी का 'प्रोक्ति–चिह्नक' कहा जा सकता है, यथा–

प्रारंभ–	यह आकाशवाणी का ....केंद्र है। अब आप ....से समाचार सुनिए।
समाचार–	.... (भिन्न–भिन्न समाचारों के बीच में – "ये समाचार आप आकाशवाणी से सुन रहे हैं।" अथवा "ये समाचार आकाशवाणी से प्रसारित किए जा रहे हैं।"
अंत में–समाचार--सारांश–	अंत में मुख्य समाचार एक बार फिर सुन लीजिए।"
समापान–	'इस के साथ ही यह समाचार–बुलेटिन समाप्त हुआ।" इसके अतिरिक्त रेडियो में कतिपय ऐसी प्रयुक्तियाँ निर्मित की गई हैं, जिन से हिन्दी की श्रीवृद्धि हुई है, यथा–
आकाशवाणी–	ऑल इंडिया रेडियो
रेडियो–	रेडियो सेट
प्रसारण–	ब्रॉडकास्ट (श्रोताओं तक कार्यक्रम का पहुँचना) ट्रांसमिशन (यॉत्रिक प्रकिया)

मिडियम वेव

शॉर्ट वेव

एफ.एम.सैंट.

वार्ता – टॉक

स्पोकन वर्ड (संगीत के अलावा समस्त कार्यक्रम)